रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355 / 79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67 / 2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127 / 204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –12 ● कानपुर 16 से 30 जून 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

प्रपोज़ल देने की कसरत शुरू

- ✓ एक संगठन दे रहा है प्रपोज़ल
- ✓ नहीं बनी सहमति
- ✓ कोरम पूरा किया जा रहा है
- ✓ अन्तिम निर्णय के पहले ही जश्न
- ✓ खुद बाटें – खुद गिनें
- ✓ किये जा रहे हैं बड़े – बड़े दावे

लोगों को मान्यता लेने की इतनी जल्दी है कि वे आपस में बैठ कर आम सहमति नहीं बनाना चाहते हैं गत अंक में आपने पढ़ा होगा कि देश के कुछ इलेक्ट्रो होम्योपैथी नेताओं द्वारा भारत सरकार द्वारा जारी 28 फरवरी, 2017 को जारी नोटिफिकेशन के जवाब देने की तैयारी कर ली है और उसे वह लोग एक प्रपोज़ल के रूप में भारत सरकार के समक्ष प्रस्तुत भी करना चाहते हैं इस प्रपोज़ल को बनाने के लिए कई मीटिंगें की गयीं और उन मीटिंगों के बाद कुछ अधकचरे निर्णय भी लिये गये इन्हीं निर्णयों में एक निर्णय यह भी लिया गया कि 9 जून, 2017 को कुछ लोग दिल्ली में एकत्रित होंगे और सुप्रीम कोर्ट के एक एडवोकेट के संरक्षण में दिये जाने वाले प्रपोज़ल को अन्तिम रूप दिया जायेगा और फिर उसे भारत सरकार तक प्रेषित किया जायेगा, इस कार्यक्रम में अधिकतम 50 लोगों के सम्मिलित होने की बात की गयी है।

ये लोग कौन होंगे इनका स्तर क्या होगा और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के ये सेवक इलेक्ट्रो होम्योपैथी की कितनी सेवा कर पायेंगे ?यह तो आने वाला समय ही निश्चित कर पायेगा ! इस प्रकार की सूचना पिछले कई दिनों से एक संगठन के कार्यकर्ताओं द्वारा लगातार सोशल मीडिया के माध्यम से इलेक्ट्रो होम्योपैथों के मध्य प्रसारित की जा रही है, सरकार को प्रपोज़ल देना अपनी बात सरकार तक पहुंचाना आवश्यक है परन्तु जैसाकि बताया जा रहा है और जिस तरह का प्रपोज़ल तैयार करवाने की चर्चा की जा रही है वह किसी भी कोण से अति लाभकारी नहीं दिखायी पड़ रही है चिकित्सकों के कार्यों से लेकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के उद्भव तक की जानकारी सरकार तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है इसमें कोई दो राय नहीं है कि सरकार के पास इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बारे में पूरी जानकारी न हो। आज़ादी के लगभग 70 सालों बाद सरकार द्वारा यह पूछना कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का इतिहास क्या है हास्यस्पद से कम नहीं है, इन 70 वर्षों में अनगिनत आन्दोलन इलेक्ट्रो होम्योपैथों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर चलाये गये उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय ने कई बार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों को नोटिस भी जारी की है और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए नीति निर्धारित करने के लिए निर्देश भी जारी किये हैं।

कई वादों में सर्वोच्च न्यायालय ने विश्व स्वास्थ्य संगठन से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सन्दर्भ में जानकारी भी चाही है तथा प्राप्त जानकारी के आधार पर आदेश भी जारी किये हैं भारत सरकार द्वारा यह जानकारी लेना कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की गुणवत्ता क्या है इसकी उपयोगिता क्या है ? तो यह भी एक ऐसा प्रश्न है जिसपर सरकार एक नहीं अनेकों बार जानकारी ले चुकी है, तभी तो 25 नवम्बर, 2003 जैसा आदेश जारी किया गया था फिर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा, शिक्षा और अनुसंधान को तब तक चलते रहने के लिए निर्देश जारी किये हैं जब तक इस नई चिकित्सा पद्धति का विनियमतीकरण नहीं कर देती है, कुल मिलाकर सरकार द्वारा एक बार फिर हमारे साथियों को गोल गोल घुमाने का प्रयास किया है एक ऐसा प्रश्न जिसका उत्तर सिर्फ़ सरकार के पास ही है उस प्रश्न का उत्तर हमारे साथी कैसे दे रहे हैं ?चूंकि इस प्रश्न का उत्तर देना उनके बस में है ही नहीं।

सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से होने वाले लाभ के बारे में पूछा है, सरकार यह जानती है कि पिछले 100 वर्षों से लाखों की संख्या में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सक इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा विधा से चिकित्सा व्यवसाय कर लोगों को रोगमुक्त कर रहे हैं अब हमारे इस कार्य का मूल्यांकन कैसे होगा ? सत्य तो यह है कि हमारे किसी भी दावे पर सरकार तभी मरोसा करेगी जब वह उसकी कसौटी पर खरा उतरेगा हमारे चिकित्सक दावा करते हैं कि उन्होंने कैंसर दमा एडस टीबी व कुष्ठ जैसी गम्भीर बीमारियों पर सफ़लता अर्जित की है अब सरकार ऐसा कोई रास्ता निकाले जिससे हमारे कार्यों का मूल्यांकन हो या फिर हम जो कुछ कह रहे हैं सरकार उसे वैसे ही स्वीकार कर ले, सरकार हमारे दावों को हमारे कथनानुसार स्वीकार करेगी यह सम्भव प्रतीत नहीं होता है।

स्वास्थ्य विभाग में बैठे सक्षम अधिकारी बिना परीक्षण के दावों को स्वीकार नहीं करेंगे, क्योंकि सरकार द्वारा अभी तक कोई भी ऐसा निकाय गठित नहीं किया गया है जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों के कार्यों की परीक्षा करे, फिर समीक्षा करके उनका मूल्यांकन करे अस्तु हमारे साथियों को किसी भी भ्रमजाल में नहीं फंसना चाहिये, इस मान्यता की मृगमरीचिका में फंस कर हम कोई ऐसी गलती न कर बैठें जिसे पकड़कर सरकार मान्यता देने में रोड़ा न अटकाने लगेमान्यता तो मिलेगी ही आज नहीं तो कल लाखों आवाज़ो को अब सरकार दबा नहीं सकती है लेकिन सरकार की चतुराई भरी नीतियों से हमें संभलकर चलना होगा हमारे जो साथी मान्यता पाने के लिए अति आतुर हैं उनकी आतुरता का सम्मान तो होना चाहिये परन्तु लाभ और हानि के हर पहलू पर विचार कर लेना चाहिये एक बात सरकार जो बार बार चतुराई के साथ कर रही है वह यह है कि सरकार जो कुछ भी करे वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए करे न कि न्यु मेडिकल सिस्टम के नाम से करे। इलेक्ट्रो होम्योपैथी और न्यु मेडिकल सिस्टम जैसे शब्दों का प्रयोग सरकार कपटपूर्वक कर रही है यह शब्द सरकार की इच्छा पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर देते हैं शब्द इलेक्ट्रो होम्योपैथी पुरातनता का परिचायक है वहीं शब्द न्यु मेडिकल सिस्टम इस बात को इंगित करता है कि कोई ऐसी विधा है जो अभी नई–नई जन्म ले रही है, योगा और सोवा रिग्पा जैसी चिकित्सा पद्धतियों को मान्यता इसलिए मिली क्योंकि सरकार उनकी सैकड़ों वर्ष पुरानी पुरातनता को इन्कार नहीं कर सकी और उसे यह स्वीकार करना पड़ा कि जो पद्धतियां सैकड़ों वर्षों से जनसामान्य को स्वास्थ्य लाभ पहुँचा रही है उसकी उपयोगिता पर कैसे प्रश्नचिन्ह लगाया जा सकता है यह बात इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर भी लागू होती है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी का जन्म 18 वीं शताब्दी में हुआ, पिछले लगभग 200 वर्षों से पूरे विश्व में प्रचलित भी है, लाखों की संख्या में इस विधा के चिकित्सक अपनी अपनी क्षमता के अनुसार चिकित्सा व्यवसाय कर लोगों को रोगमुक्त कर रहे हैं भारत वर्ष में तो इस विधा की एक नहीं कई–कई बार परीक्षायें हुई हैं मंगलूर में बना हुआ कुष्ठ रोग का अस्पताल आज भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की प्राचीनता का बखान कर रहा है, सन् 1952–53 में डा0 सिन्हा द्वारा कुष्ठ रोगियों को ठीक कर सरकार की चुनौती का जवाब दिया था इतनी पुरानी और अच्छी चिकित्सा पद्धति के बारे में यह पूछना कि इस पद्धति की उपयोगिता क्या है ?निश्चित रूप से शासन में बैठे अधिकारियों का यह एक छलप्रपंच है, हमें उनके इस छलावे में नहीं आना है यह बात बार–बार प्रचारित करना कि अन्तिम अवसर है, लाभ उठा लो, तो मित्रों ! अवसर अन्तिम कभी नहीं होता एक राह बन्द होती है तो दूसरी राह खुल जाती है इसलिए अतुरता की आवश्यकता नहीं है, सरकार की छद्म बातों से बचकर रहते हुए हमें वही बताना है जो वास्तविक है और सत्य है अब रही बात जश्न मनाने की इलेक्ट्रो होम्योपैथी का हर दिन जश्न का दिन होता है जब भी हमारा कोई रोगी हमारी पद्धति से ठीक होता है तो वह दिन सारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए जश्न का दिन होता है, आन्दोलन सतत और अनवरत चलते रहने हैं क्योंकि शैशवावस्था से युवावस्था आने में हमें बहुत कुछ बर्दाश्त करना होगा क्योंकि जमी हुई पद्धतियों के बीच अपनी पहचान बनाना आसान नहीं होता इसलिए आन्दोलन समाप्त हो जायेगा इस भ्रम को भी नहीं रखना चाहिये सरकार हमें मान्यता से दूर रखे यह हो नहीं सकता।

परन्तु यह तभी सम्भव है जब हम सरकार के किसी भी लुभावने भ्रमजाल में न फँसे वरना प्यासे हिरन की तरह मृगमरीचिका में फँस कर प्राण गवाने पड़ते है।

नायक बनने का शौक

व्यक्ति अपने मन में यह सपना संजोये रहता है कि जीवन में उसकी पहचान एक नायक की तरह हो और उसकी भूमिका भी महत्वपूर्ण हो, यह शौक आज के इलेक्ट्रो होम्योपैथों में कुछ ज्यादा ही पनप रहा है।

शौक आखिर शौक होता है शौकीन व्यक्ति जब शौक पालता है तो यह विचार नहीं करता है कि उसका पाला हुआ शौक मंहगा होगा या सस्ता, सही बात भी है वह शौकीन ही क्या जो अपने शौक को पूरा करने के लिये आगे पीछे का विचार करे, जो होगा देखा जायेगा पर आज तो हम अपना शौक पूरा ही कर लें परन्तु यह संदर्भ व्यक्तिगत स्तर पर तो किसी हद तक ठीक है परन्तु बात जब सामाजिक और बहुजन हित से जुड़ी हो तब वहाँ पर अपने शौक को पूरा करने के लिये हर अच्छे–बुरे पहलू पर गंभीरता से विचार करना होता है।

नायक बनना किसे अच्छा नहीं लगता ?नायक बनने के लिये जो प्रकृति प्रदत्त गुण होते हैं उनकी पूर्णतः के बाद ही नायक की जो छवि उभर कर सामने आती है वही वास्तविक नायक की छवि होती है, आज कल इलेक्ट्रो होम्योपैथी में नायक बनने की इच्छा प्रायः हर छोटे–बड़े नेता में दिखायी पड़ने लगी है और वह अपनी इस इच्छा की पूर्ति के लिये किस स्तर तक चला जाता है इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं, हर आन्दोलन के अपने नायक होते हैं जिनके नेतृत्व में चलते हुये आन्दोलन को गति मिलती है और सच्चा नायक तो वह होता है जो सबको साथ लेकर चलने की कला में प्रवीण होने के साथ–साथ आन्दोलन से जुड़े हर पक्ष को मज़बूती के साथ रखने में सक्षम हो।

किसी भी आन्दोलन में आन्दोलन से जुड़ा शत्–प्रतिशत व्यक्ति आपके विचारों से सहमत हो सह सम्भव नहीं होता ! क्योंकि हर व्यक्ति की विचार धारा अलग–अलग होती है परन्तु सच्चा नायक हर विचार धारा को आत्मसात करते हुये आम सहमति बनाने का प्रयास करता है और यही उसके नायकत्व का प्रथम और अभीष्ट गुण होता है, आम सहमति के आधार पर लड़ी गयी लड़ायी कभी भी प्रायश्चित करने को विवश नहीं करती है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक आन्दोलन व्यक्तिगत नहीं है यह सार्वजनिक है इस आन्दोलन से लाखों लोगों का जीवन जुड़ा है इसलिये आन्दोलन के हर पहलू पर एक नहीं कई–कई बार चिन्तन करना होता है, जब कोई आन्दोलन निर्णायक मोड़ पर खड़ा हो तब उस आन्दोलन से जुड़े हर ज़िम्मेदार व्यक्ति का यह दायित्व होता है कि वह व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर मात्र जनहित की ही बात सोचे क्योंकि जिन साथियों के साथ से आप नायक बनने जा रहे हैं उनके हितों की अनदेखी न होने पाये, कारण पाने वाला सब कुछ पा लेना चाहता है यदि कुछ भी पाने में न्युनता रह जाती है तो पाने वाला व्यक्ति इस न्युनता का ठीकरा उस व्यक्ति पर थोप देता है जो अगुवायी कर रहा होता है, इससे अगुवायी करने वाले व्यक्ति के जीवन भर की मेहनत एक पल में धूल–धूसरित हो जाती है इसलिये प्रत्येक आन्दोलन में जो भी कदम उठाया जाये उसमें पारदर्शिता हो और मानसिक शुचिता के भी दर्शन हों। इन परिस्थितियों में अब जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन धीरे–धीरे सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है और परिस्थितियां इस बात का सपष्ट संकेत दे रही हैं कि आने वाले दिनों में परिणाम कुछ सापेक्ष ही आने हैं ऐसे में हमारे नेतृत्वकर्ताओं का यह दायित्व बनता है कि वह जो कुछ भी निर्णय ले रहे हैं उनमें साम्यता हो और सरकार के मानकों के अनुरुप हो।

जो अच्छा अवसर हमें प्राप्त हुआ है उस अवसर का हम भरपूर प्रयोग करें और अच्छे परिणामों की प्रतीक्षा करें शीघ्रता, हड़बड़ी या जल्दबाज़ी इन तीनों शब्दों से हमारे साथियों को हर पल बचना होगा क्योंकि यही वह तीन शब्द हैं जिनके प्रयोग से गति या दिशा बदल जाती है इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का आन्दोलन न तो सीमाओं में बंधा है और न ही किसी संगठन की कृपा का मोहताज है जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के वास्तविक हित में काम करेगा वही इलेक्ट्रो होम्योपैथी का नायक होगा

कल के नायक आज के षड़यंत्रकारी

धूप और छाँव बारी–बारी से आते हैं और इनका आनन्द सभी जीवधारी व पेड़–पौधे भी लेते हैं दोनों का अपना महत्व है परन्तु ज़्यादा तपिश और ज़्यादा छाँव भी हानिकारक होती हैं, अति कभी भी लाभकारी नहीं रही है तभी तो विद्वानों ने अधिकता पर नियन्त्रण की बात कही है और बार–बार सचेत भी किया है कि अति सर्वत्र वर्जयते सामान्य जीवन हो या सार्वजनिक जीवन दोनों ही प्रकार के जीवन में अति से परहेज़ करना चाहिये।

वर्तमान में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के आन्दोलन में अतिरेकता–अतिरेकता के ही दर्शन हो रहे हैं जिसका परिणाम यह हो रहा है कि आन्दोलन प्रभावित हो रहा है, कोई एक राय नहीं बन पा रही है, आम सहमति की बात तो दूर कोई एक दूसरे से बात तक नहीं करना चाहता, परिस्थितियां यह बन गयी हैं कि जो आन्दोलन एकरुपता के साथ चलना चाहिये वह आन्दोलन घटकों व धड़ों में बंटकर रह गया है। कष्ट तो तब होता है जब इन आन्दोलनकारियों की विचारधारायें सामने आती हैं तो उनमें कहीं सामन्जस्य के लिये स्थान नहीं होता और जनहित में चलाया जाने वाला यह आन्दोलन वर्तमान में ऐसे चलाया जा रहा है जैसे कि कोई तानाशाही हो !

जो हम कह रहे हैं वही सच है ! ऐसा प्रमाणित किया जा रहा है कि कल तक जो कुछ भी कहा गया या बताया गया वह सच्चाई से कोसों दूर था अतीत को धूमिल बनाने का कुत्सित प्रयास जारी है और जो चन्द लोग इस कार्य में लगे हैं वह जनमानस को प्रभावित करने में आंशिक रुप से स्वयं को सफल समझते हैं और इस सफलता के लिये वे अपनी पीठ स्वयं थपथपा लेते हैं और तो और इस आन्दोलन को दिशाओं में बांट दिया है। कल तक इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का जो आन्दोलन राष्ट्रीय स्वरुप लिये हुये था आज वह भ्रान्तीयता के आवरण में लिपटा हुआ है और राष्ट्रीय स्वरुप मात्र दिखावा बनकर रह गया है, पूरब – पश्चिम – उत्तर – दक्षिण के स्पष्ट भेद दिखायी पड़ने लगे हैं।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जहाँ पर क्षेत्रीयता हावी होती है वहाँ पर राष्ट्रीयता के दर्शन छद्म रुप में ही होते हैं, यह चिकित्सा पद्धति के लिये कोई शुभ लक्षण नहीं है, ऐसे लक्षणों को देख कर इनका निदान कर इनके शमन का प्रयास होना चाहिये यदि अभी भी चुप्पी साधी गई तो निसंदेह हम सब भीष्म पितामाह की भांति कठघरे में खड़े किये जायेंगे।

अब प्रश्न यह उठता है कि यह परिस्थितियां किस तरह से निर्मित हुयीं और इन परिस्थितियों के निर्माण में किनका प्रत्यक्ष या परोक्ष योगदान है ?यदि हम थोड़ा सा अतीत में जायें तो सबकुछ दर्पण की तरह स्पष्ट नज़र आने लगे गा, इलेक्ट्रो होम्योपैथिक आन्दोलन कोई नया नहीं है 100 साल से चलाया जा रहा है, आज़ादी के बाद इस आन्दोलन में तेज़ी आयी और इसी आन्दोलन का ही परिणाम था कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास को पंख लग गये, प्रचार व प्रसार इतना तेज़ हुआ कि पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी नज़र आने लगी इसी काल खण्ड में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अनेकों क्रान्तिकारी परिवर्तन हुये, शिक्षा के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन हुआ, चिकित्सकों की बहुत बड़ी खेप चिकित्सा के क्षेत्र में उतरी, नये–नये साहित्य का सृजन भी हुआ , अनुसंधान के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य हुआ औषधियों के एकाधिकार का भ्रम जाल टूटा, औषधियां सर्वसुलभ हो गयीं जिसका परिणाम यह हुआ कि हमारे साथियों ने भारत सरकार से अधिकारों की माँग शुरु कर दी। 1990 से 2000 तक के कालखण्ड में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक आन्दोलन चरम पर रहा सरकार को बहुत सारे नीतिगत निर्णय लेने पड़े, इसी आन्दोलन का ही दबाव था कि न्यायालयों को सरकारों को आदेश देने पड़े, केन्द्र सरकार और राज्य सरकारें भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये निर्णय हेतु विवश हुयीं, यह सब आन्दोलन के कारण ही हुआ था और इन आन्दोलनों का कोई नेतृत्व भी करता था, नायक हुआ करते थे, वह दृष्य देखते ही बनते थे जब इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का चिकित्सक व छात्र अपने नायक की एक आवाज़ पर अपना सर्वस्व निछावर करने को तत्पर हो जाते थे।

तबके नायकों में और आज के नायकों में अन्तर स्पष्ट नज़र आता है तब त्याग और समर्पण था अब स्वार्थ और प्राप्ति की लिप्सा है इसीलिये आन्दोलनों में वह धार नहीं है जो धार होनी चाहिये परन्तु हमारे पूर्व के नायकों में भी कुछ कमी ज़रुर रही होगी जो मंज़िल तक नहीं पहुँच सके, जैसा कि लेख के प्रारम्भ में है कि अतिरेकता सदैव दुःखदायी होती है और इसी अतिरेकता का परिणाम है वर्तमान परिदृष्य। नायक बनने की होड़ में लोगों ने जो कुछ भी कर दिया उसे इतिहास कभी क्षमा नहीं करेगा।

अतीत से प्रेरणा लेकर हमें वर्तमान जीतना है क्योंकि कहा गया है कि गतम् न सोचामि। कृतम न मन्ये ।। अर्थात जो गुज़र गया उसपर सोच विचार नहीं करना चाहिये और जो कर चुके उसका विषाद नहीं होना चाहिये अपितु अतीत से प्रेरणा लेकर नयी नीति का निर्माण हो और दृढ़संकल्प के साथ विजय हेतु लग जाइये हमें यह ध्यान रखना होता है कि जो संकल्प लिये हैं उनकी पूर्ति की प्रतिबद्धता हो न कि हठधर्मिता क्योंकि प्रतिबद्धता समर्पण को जन्म देती है और हठधर्मिता तानाशाही की ओर ले जाती है।

हमें अपने पुराने नायकों को भूलना नहीं है वे हमारे आदर्श हैं और प्रेरणास्रोत भी, हम उनके संरक्षण में ही इस आन्दोलन के सफ़लता की कामना भी करते हैं क्योंकि हमारे यह नायक नीति निपुण हैं हमें इनकी राह पर चलना है और उन लोगों को करारा जवाब भी देना है जो हमारे इन नायकों को षड़यन्त्रकारी का दर्जा दे रहे हैं, जो आज है वह कल पुराना ज़रुर होगा, जो आज तेजोमय है ! कल धूमिल भी होगा !! लेकिन आन्दोलन चलता रहेगा सरकारीकरण के बाद भी ऐसे बहुत सारे बिन्दु होते हैं जहाँ निरन्तर आन्दोलन की आवश्यकता होती है आज बनाने की शीघ्रता में हम अपना कल नहीं बिगाड़ सकते, जो कष्ट हमने झेला है उसे हम आने वाली पीढ़ी को नहीं देना चाहते इसलिये व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर हम सब को एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना है जहाँ से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की प्रगति की किरण निकलती हो।

यह ज़िम्मेदारी हम सबकी है हमारा एक–एक साथी नायक है हम किसी के पराश्रित नहीं हैं।

सिर्फ़ जज़्बात हैं .... जज़्बात में रखा क्या है ?

कहा जाता है कि किसी भी कार्य की पूर्ति के लिये उससे भावनात्मक रुप से जुड़ाव का होना अति आवश्यक होता है क्योंकि जब तक मनुष्य की भावनायें सीधे तौर पर कार्य से नहीं जुड़ती हैं तब तक मनुष्य का न तो कार्य के प्रति रुझान होता है और न ही कार्य करने की इच्छा, भावनाओं का सम्बन्ध मात्र कार्य से ही नहीं होता है अपितु जीवन के हर क्षेत्र में भावनाओं का अपना अलग ही महत्व होता है चाहे वह निजी कार्य हो या सामाजिक, जब तक उससे सीधे तौर पर भावनायें नहीं जुड़ती हैं तब तक वह आनन्द नहीं प्राप्त होता है जिस आनन्द की हमें अपेक्षा होती है, रिश्तों में भी भावनाओं का अपना एक अलग स्थान है, चाहे पिता के प्रति पुत्र की भावना हो, गुरु के प्रति शिष्य की भावना हो इस तरह से समाज में जितने भी रिश्ते बनाये गये हैं सभी में भावनाओं का अपना एक अलग स्थान है, भावनाओं से ही मोह होता है और यही मोह हमको एक दूसरे से जकड़े रहता है, माता जब शिशु को जन्म देती है तो जन्म के पूर्व गर्भावस्था के दौरान भी माता का अपने गर्भस्थ शिशु से भावनात्मक सम्बन्ध हो जाता है, भावनाओं का जन्म मानसिक संवेगों के कारण होता है और व्यक्ति जिस प्रकार की परिस्थितियों से गुज़र रहा होता है वह परिस्थितियां कहीं न कहीं मनुष्य की भावनाओं को प्रभावित करती हैं।

भावनाओं का यही सम्बन्ध आन्दोलनों से होता है, मनुष्य जिस आन्दोलन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से जुड़ता है उसका जुड़ाव इन्हीं भावनाओं के कारण ही होता है, यह भावनायें ही हैं जो एक दूसरे से जुड़ने की कड़ी बनाती हैं और यही कड़ी आन्दोलन को गति प्रदान करती हैं, इलेक्ट्रो होम्योपैथी से लोगों का कई तरह से भावनात्मक जुड़ाव है, जो चिकित्सक हैं वे इसलिये जुड़े हैं कि इस पद्धति का विकास हो जिससे उन्हें सामाजिक सम्मान व अजीविका हेतु स्थायित्व प्राप्त हो, जो छात्र इस पद्धति में अध्ययनरत हैं उनका जुड़ाव इसलिये है कि जब हम पढ़कर बाहर निकलेंगे तो एक सम्मानजनक अजीविका के साथ–साथ सामाजिक स्नेह भी प्राप्त होगा जो उनके अच्छे भविष्य में निर्णायक होगा, जो रोगी हैं उनका जुड़ाव इसलिये होता है कि इस पद्धति को भी विकास का उचित अवसर मिले जिससे कि अनुसंधान के नये मार्ग खुलें और उन असाध्य बीमारियों पर जहाँ अन्य पद्धतियां निराश करती हैं वहाँ इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक मज़बूत विकल्प तैयार करती है।

इस तरह से हम जिस क्षेत्र में भी दृष्टि डालते हैं वहाँ हमें भावनात्मक ही भावनात्मक सम्बन्ध नज़र आते हैं और यही भावनायें प्रगति की नींव डालती हैं, हम जहाँ पर खड़े हैं और जहाँ से चले थे वहाँ से यहाँ तक की दूरी भावनात्मक जुड़ाव से पूरी हो सकी है, बिना भावनाओं से जुड़े कोई भी आन्दोलन सफल नहीं हो सकता है, देश की आज़ादी का आन्दोलन भी भावनात्मक जुड़ाव से ही सफ़ल हुआ, वह भावनायें ही थीं जिन्होंने बच्चे, बूढ़े, जवान, नर–नारी जिनमें राष्ट्र के प्रति प्रेम जागृत हुआ और इसी प्रेम के कारण मज़बूत और ताकतवर अंग्रेज़ी साम्राज्य भी धाराशाही हो गया, इतिहास बार–बार इस बात का साक्षी बनता है कि जितनी ताकत भावनाओं में है उतनी ताकत बड़े से बड़े अस्त्र में भी नहीं होती है, जिस समाज की भावना जिससे जुड़ जाती है वहां सफ़लता ज़रा भी संदिग्ध नहीं होती है और इन्हीं भावनाओं का परिणाम होता है कि कभी–कभी कुछ स्वार्थी और शरारती लोग लोगों की भावनाओं को भड़का कर अपनी स्वार्थपूर्ति कर लेते हैं वह इस बात का आंकलन भी नहीं करते हैं कि निजी अकांक्षाओं की पूर्ति के लिये वह समाज का कितना बड़ा नुकसान कर देते हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का आन्दोलन आज भी भावनात्मक रिश्तों से जुड़ा है, चूंकि यह एक चिकित्सा पद्धति है और चिकित्सा पद्धति का सीधा सम्बन्ध मनुष्य के जीवन से होता है अस्तु यहाँ जो भी आन्दोलन चलाये जाते हैं वह जनहित से जुड़े होते हैं भावनायें बनती और बिगड़ती हैं।

आज आपकी भावनायें जिससे जुड़ी हैं हो सकता है कल वह भावनायें किसी और से जुड़ जायें, भावनायें कहीं भी जुड़ें, किससे भी जुड़ें पर हर समय यह स्मरण रखना चाहिये कि भावना के इस खेल में इतना भी मत बहिये कि कोई आपका सब कुछ ले जाये और फिर आप प्राश्चित करें, तब यही कहेंगे कि .....

सब कुछ लुटा के होश में आये तो क्या हुआ .....

आज इलेक्ट्रो होम्योपैथिक में भावनाओं का जुड़ाव नहीं हो पा रहा है यह सोचने का विषय है क्योंकि इस समय इस आन्दोलन को संचालित होते रहने के लिये भावनात्मक जुड़ाव का होना अति आवश्यक है। आज से 20 वर्ष पूर्व के आन्दोलनों पर यदि हम एक दृष्टि डालें तो हमें दिखायी पड़ता है कि अब की तुलना में तब लोगों में भावनात्मक जुड़ाव ज़्यादा था, 20 वर्ष के अन्दर ही इतना बड़ा परिवर्तन हमें सोचने पर विवश करता है कि वह कौन से कारण है जिनके कारण हमारे चिकित्सकों का इतनी तेज़ी के साथ इस आन्दोलन से मोह भंग हो रहा है ! यदि हम इस विषय पर दृष्टि डालें तो एक नहीं कई ऐसे कारण मिलेंगे जो यह बता देंगे कि गलतियां कहाँ हैं ?मोह भंग का सबसे प्रमुख कारण है आन्दोलन का बहुत समय तक लम्बा खिंचना, जो चीज़ मनुष्य की रोज़ी रोटी से जुड़ी होती है उस चीज़ के बारे में व्यक्ति बहुत देर तक प्रतीक्षा नहीं कर पाता है क्योंकि यह उसके जीवन मरण का प्रश्न होता है।

सन् 70 के दशक के बाद जब इलेक्ट्रो होम्योपैथिक में नये लड़के अपना भविष्य बनाने के लिये जुड़ने लगे तो उन्हें यह लगने लगा कि वह जिस चिकित्सा पद्धति से जुड़े हैं उसमें पूर्ण शासकीय संरक्षण नहीं है, पूर्ण शासकीय संरक्षण नहीं होने के कारण उन्हें कभी भी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है अस्तु उन्होंने शासकीय संरक्षण पाने के उद्देश्य से आन्दोलन को जन्म दिया और जब यह आन्दोलन गति पकड़ने लगा तब तत्कालीन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के सर्वे–सर्वाओं ने आन्दोलन को भी व्यवसाय के हितों से साध लिया मान्यता की प्रतीक्षा में 70 से 90 बीस वर्ष का लम्बा समय व्यतीत हो गया परन्तु नौजवान पीढ़ी इस उम्मीद में जुड़ती रही कि आज नहीं तो कल यह आन्दोलन रंग ज़रुर लायेगा और इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को शासकीय संरक्षण अवश्य प्राप्त होगा, 90 से लेकर 2000 तक का कालखण्ड इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के आन्दोलन में एक नये रुप में अवतरित हुआ इसी कालखण्ड में 18 नवम्बर, 1998 का आदेश व 24 नवम्बर, 2000 का महत्वपूर्ण आदेश हुआ इन आदेशों के क्रियान्वयन के लिये हमारे चिकित्सक आन्दोलन से जुड़े रहे, इन 10–12 वर्षों में आश्वासनों की इतनी घुट्टी पिलायी गयी कि हमारे साथियों को वह हज़म नहीं हुयी, धीरे–धीरे वर्ष 2003 आया जो कुछ भी हुआ सब सामने है।

वर्ष 2003 ने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक आन्दोलन की कमर तोड़ के रख दी, वर्ष 2003 से 2010 तक इलेक्ट्रो होम्योपैथिक में जो वातावरण रहा उसमें रहे सहे आन्दोलन को भी धीमा कर दिया लोगों में अविश्वास की भावना ने जन्म ले लिया, आरोपों प्रत्यारोपों का सिलसिला प्रारम्भ हो गया, आस्थायें नष्ट होने लगी आत्मविश्वास डगमगाने लगा आधे से ज़्यादा लोगों ने अपने व्यवसाय तक बदल दिये शेष जो बचे रहे वह भी एक अज्ञात भय से भयभीत रहे, सब कुछ तार–तार हो गया नेतागण नेपथ्य में चले गये, 05–05–2010 को जो संजीवनी प्राप्त हुयी उससे कुछ स्पंदन प्रारम्भ हुआ, 21 जून, 2011 को इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया के प्रयास से जो प्राण वायु प्राप्त हुयी उसने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की रुकी हुयी गति में फिर से नई जान डाल दी।

एक परिवर्तन भी हुआ अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी दो धड़ों में बंट गयी थी एक अधिकार प्राप्त संस्थायें दूसरे वे लोग जो अधिकारों के लिये संघर्षरत थे, जब उन्हें कार्य करने का वैधानिक अधिकार नहीं मिला तो मान्यता का पुराना राग फिर से अलापना शुरु कर दिया ऐसे नेतागण जो अप्रासंगिक हो चुके थे उन्होंने कुछ नये युवाओं को संरक्षण प्रदान कर आन्दोलन चलवाया प्रारम्भ में इन युवाओं ने अपने उन मार्गदर्शकों का संरक्षण लिया, साल–दो साल के अन्दर बहुत कुछ सीख कर खुद ही नायक बन बैठे परन्तु इस अफ़रातफ़री में बहुत सारे ऐसे लोगों को अपने साथ जोड़ लिया जिनका इलेक्ट्रो होम्योपैथिक पर भरोसा ही नहीं था तभी तो जीवन के संधिकाल में अपने आप को सुरक्षित बनानें के लिये अन्य चिकित्सा पद्धतियों के शरणागत हो गये। ऐसे लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का क्या भला करेंगे ?यह तो आने वाला समय ही बतायेगा ! 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार द्वारा जारी नोटिफ़िकेशन ने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के इन नेताओं को नेतागिरी चमकाने का एक बैठा बिठाया अवसर प्रदान कर दिया इस नोटिफ़िकेशन की आड़ में तरह–तरह के करतब किये जा रहे हैं, चिकित्सकों को मान्यता का सुनहरा बाग दिखाया जा रहा है, अच्छे भविष्य के सपने फिर से दिखाये जाने लगे हैं।

अर्थात एक बार फिर से लोगों को भ्रमजाल में फंसाया जा रहा है, लोगों की भावनाओं से खेल शुरु हो गया है, अपने और पराये की खायी खींची जा रही है और एक ऐसी विभाजक रेखा खींची जा रही है जो घातक भी हो सकती है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी विश्व स्तरीय चिकित्सा पद्धति है

सोशल मीडिया का इन दिनों काफ़ी प्रभाव बढ़ता जा रहा है सोशल मीडिया के माध्यम से प्रसारित होने वाले सन्देशों को लोग–बाग काफ़ी महत्व देते हैं और उस विषय पर तर्क–वितर्क भी करते हैं तर्क करते समय वह इतना भी नहीं सोचते हैं कि जो सन्देश प्रसारित किया जा रहा है उसमें कितनी सच्चाई है और जो प्रसारित कर रहा है वह कितना विश्वसनीय है।

पिछले दिनों इलेक्ट्रो होम्योपैथी से सम्बन्धित एक चित्र व समाचार प्रसारित किया गया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी अब अन्तर्राष्ट्रीय भी हो गयी है, इस समाचार को जब लोगों ने पढ़ा तो कुछ को तो प्रसन्नता हुई और कुछ जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बारे में काफ़ी कुछ जानते हैं वह थोड़े से असहज हुए ! क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप काफ़ी पुराना है। सामान्य सी बात है इटली से निकल कर जर्मनी होते हुए भारत वर्ष में आना यह स्वयं इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप को दर्शाता है जहाँ तक चिकित्सकों और रोगियों का सवाल है तो इस विधा के चिकित्सक विश्व के बहुत सारे देशों में फैले हुए हैं।

अब बात रही रोगियों की तो जो चिकित्सक जिस देश में निवास करता है वह चिकित्सक उस देश के नागिरकों को स्वास्थ्य लाभ भी प्रदान करता है, किसी विदेशी का भारत आकर किसी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सक से इलेक्ट्रो होम्योपैथी सीखना और उससे उपचार करवाना कोई नई बात नहीं है हमारे देश के बहुत सारे लोग अपना इलाज कराने विदेशों में जाते हैं तो क्या विधा में कोई अन्तर आ जाता है ? डा0 नन्दलाल सिन्हा के युग में बहुत सारे विदेशी छात्र भारत वर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी सीखने आते रहे हैं और सबसे मज़ेदार बात यह है कि स्व0 सिन्हा ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी का कोर्स लंदन से किया था। बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 से शिक्षित बहुत सारे चिकित्सक विदेशों में काम कर रहे हैं मॉरेशस, श्रीलंका, नेपाल, भूटान व यूरोप के कई देशों में यहाँ के चिकित्सक चिकित्सा व्यवसाय कर रहे हैं और तो और बरमिंघम में बोर्ड का एक शिक्षण केन्द्र भी चलता रहा है।

जहाँ इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा और दीक्षा की व्यवस्था थी, बरमिंघम केन्द्र से निकले हुए बहुत सारे छात्र एक सफ़ल इलेक्ट्रो होम्योपैथ के रूप में चिकित्सा पद्धति का मान और सम्मान दोनों बढ़ाये हैं, इस तरह से आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी विश्व स्तरीय चिकित्सा पद्धति के रूप में पहचान की मोहताज नहीं है। अब रही बात मान्यता की तो मान्यता और मान्यता प्राप्त इस तरह का विषय एशियायी देशों में है विश्व के अन्य देशों में सिर्फ़ एलोपैथी चिकित्सा पद्धति ही मान्यता की श्रेणी में आती है बाकी अन्य चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों को चिकित्सा व्यवसाय करने का अधिकार होता है यदि जिस चिकित्सा पद्धति से वह चिकित्सा व्यवसाय कर रहा होता है और रोगी को हानि होती है तब रोगी की शिकायत के आधार पर उस चिकित्सक के विरूद्ध कार्यवाही होती है लेकिन यदि चिकित्सक ने अपने आप को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सक के रूप में प्रमाणिकता दे दी तो उस चिकित्सक पर कोई भी कार्यवाही नहीं होती है। उदाहरण के रूप में बोर्ड की अधिकारिता व राष्ट्रीय स्वरूप के लिए मॉरेशस से भारत वर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी सीखने आये श्री चन्द्रावल रामद्वार व श्री राज कुमार आये, यहाँ पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा ग्रहण की और मॉरेशस में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की बहुत शानदार प्रैक्टिस की इससे न केवल बोर्ड का नाम बढ़ा बल्कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भी प्रसार हुआ ब्रिटेन के बरमिंघम राज्य में रहने वाले डा0 सिंह ने अपनी प्रैक्टिस से इलेक्ट्रो होम्योपैथी का डंका बजा दिया था यह उदाहरण इस लिए दिये गये हैं जिससे कि आप लोगों को यह जानकारी हो जाये कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का स्वरूप विश्वस्तरीय रहा है और लगातार बढ़ रहा है।

हाँ यदि कोई विदेशी भारत में आकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी सीखता है तो यह हम सबके लिए गौरव की बात है और यदि कोई भारतीय विदेश में जाकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी का प्रचार व प्रसार करता है वह भी सम्मानीय है, आज भी बहुत सारे ऐसे भारतीय हैं जो विदेशों में जाकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी का प्रचार व प्रसार चिकित्सा के माध्यम से व संगठन के माध्यम से कर रहे हैं इतना सबकुछ होने के उपरान्त भी भारत वर्ष में अभी तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वह स्थान नहीं प्राप्त हो पाया जो प्राप्त होना चाहिये। पिछले कुछ वर्षों से भारत सरकार के रवैये में परिवर्तन आया है और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी भी अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए सकारात्मक दृष्टि बना रखे हैं इसी का परिणाम है 28 फरवरी, 2017 भारत सरकार द्वारा जारी मैकेनिज़्म के लिए नोटिफिकेशन इस नोटिफिकेशन में आने के बाद यह उम्मीद बन चुकी है कि भारत सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कुछ न कुछ सकारात्मक निर्णय लेना चाहती है, जितना दायित्व सरकार का है उससे कम जिम्मेदारी हम सबलोगों की भी नहीं है हमें अपना पक्ष मज़बूती के साथ सरकार के समक्ष रखना है जिससे कि सरकार में बैठे अधिकारी किसी भी तरह की कोई कमी न निकाल सकें वैसे इस कार्य को पूरा करने के लिए पूरे देश के कई संगठन लगे हुए है परन्तु आपसी सामंजस्य न होने कारण मतभिन्नता के स्पष्ट दर्शन हो रहे है।

इसे शीघ्र दूर करके इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय संरक्षण दिलाने की दिशा में कार्य करना होगा।

कुछ अलग करके दिखाना होगा

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की पहचान बनानी है तो इस पद्धति से जुड़े चिकित्सक को कुछ हट कर के काम करना होगा तभी आपकी और आपकी पैथी की पहचान बनेगी, क्योंकि दवा देने का तरीका और दवाओं का रूप रंग एक जैसा होने के कारण लोग होम्योपैथी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अन्तर नहीं कर पाते ! चिकित्सा वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी से करता है लाभ भी लेता है परन्तु जब कहीं समाज में चर्चा करता है तो यही बताता है कि मैंने इस होम्योपैथ से चिकित्सा ली।

तमाम जागरूकता के उपरान्त भी सामान्य जन तक अभी नहीं पहुँच पायी कि होम्योपैथी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी में क्या अन्तर है! इसलिए हमारे चिकित्सक ऐसी गम्भीर बीमारियों पर कार्य करें जिन बीमारियों पर अन्य चिकित्सा पद्धतियां हथियार डाल देती हैं यह विचार एक सामाजिक संगठन द्वारा आयोजित एक जागरूकता कार्यक्रम में वक्ताओं द्वारा व्यक्त किये गये।

अवसर था कि इस कार्यक्रम में हर विधा के चिकित्सक अपनी–अपनी विधा की उपयोगिता और गुणवत्ता पर चर्चा कर रहे थे तभी होम्योपैथी के एक वक्ता ने कहा कि होम्योपैथी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक जैसी लगती है इसलिए लोगों में भ्रम रहता है इस चुनौती को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के वक्ता ने स्वीकार किया और कहा होम्योपैथी जहाँ ख़त्म होती है इलेक्ट्रो होम्योपैथी वहाँ से शुरू होती है हर विधा की अपनी अपनी योग्यता होती है कोई पद्धति किसी से कम नहीं है सब की अपनी उपयोगिता है।

यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथ को अपनी पहचान बनानी है तो कुछ अलग हटकर काम करना होगा।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया

द्वारा

6 वाँ विजय दिवस दिनांक 21 जून,2017 दिन बुधवार को आयोजित होने वाले समारोह में देश का हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ अपने जनपद में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में सम्मिलित होकर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ायें कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी जनपद के स्थानीय प्रभारी से प्राप्त करें

निवेदक

डा0 मो0 हाशिम इदरीसी
अध्यक्ष

डा0 श्रीमती शाहीना इदरीसी
कोषाध्यक्ष

डा0 अतीक अहमद
महासचिव (मुख्यालय)

डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी
प्रमुख महासचिव

डा0 इदरीस खान
केन्द्रीय सचिव

डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा
संयुक्त सचिव